BHARTHI COLLEGE OF EDUCATION

An Abode of Education

KANDRI, Mandar, Ranchi

B.Ed

SESSION: 2018-2020

EPC-2

PROJECT

DRAMA AND ART IN EDUCATION

EXTERNAL

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Guided by:-

ASST. PROF./ LECT.
Mr. Rakesh kumar Rai

Submitted By:-

NAME :- NISHANT ASHISH TIRKEY
ROLL NO :- 12

आभार ज्ञापन

बी0एड0 की प्रशिक्षु होने के नाते मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे EPC-2 के प्रोजेक्ट के कार्य हेतु **"कला का अर्थ एवं अवधारणा, भारतीय परम्परागत शिल्पकला"** पर अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ, इस प्रोजेक्ट कार्य करने के दौरन मुझे इससे सम्बंधित अनेक जानकारियाँ मिली।

इस प्रोजेक्ट कार्य को प्रस्तुत करने में हमारी शैक्षिक सचिव श्रीमती **दीपाली परासर** एवं प्रभारी **प्रचार्य** एवं व्याख्याता **राकेश कुमार राय** ने विशेष योगदान दिया। जिसके लिए मैं आप सभी को विशेष आभार एवं हार्दिक कृतज्ञयता का भाव व्यक्त करता हूँ।

मैं अपने माता–पिता सभी मित्रों एवं परिजनों को धन्यवाद देता हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मेरे प्रोजेक्ट कार्य में सहयोग प्रदान किये हैं।

धन्यवाद।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **निशांत आशिष तिर्की** बी0 एड0 की प्रशिक्षु ने वृद्धा आश्रम परियोजना कार्य को व्याख्याता **राकेश कुमार राय** की देखरेख में रूप में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

इस अवधि में इनका कार्य सहयोगात्मक एवं सराहनीय रहा।

मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रशिक्षु का नाम– **निशांत आशिष तिर्की**

कक्षा – बी0 एड0 प्रथम वर्ष

क्रमांक– 12

व्याख्याता का नाम

राकेश कुमार राय

व्याख्याता का हस्ताक्षर

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

BHARTHI COLLEGE OF EDUCATION

An Abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed

SESSION: 2018-2020

EPC-2

PROJECT-1

TOPIC- "कला का अर्थ एवं अवधारणा"

EXTERNAL

Guided by: -

ASST. PROF
RAKESH KUMAR RAI

Submitted By:-

NAME: - NISHANT ASHISH TIRKEY
ROLL NO: - 12
SESSION: - 2018-2020

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **निशांत आशिष तिर्की बी0 एड0 के प्रशिक्षु ने EPC-2** परियोजना कार्य में **राकेश कुमार राय** की देखरेख में सफलता पूर्वक सम्पन्न किया गया।

इस अवधि में इनका कार्य सहयोगात्मक एवं सराहनीय रहा।

मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

प्रशिक्षु का नाम– **निशांत आशिष तिर्की**

कक्षा– **बी0 एड0 प्रथम वर्ष**

सत्र– **2018–20**

क्रमांक–**12**

व्याख्याता का नाम

प्रो0 राकेश कुमार राय

व्याख्याता का हस्ताक्षर

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रश्न : कला का अर्थ एवं अवधारणा बताइए ।

परिचय :— कला (आर्ट) शब्द इतना व्यापक है कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ केवल एक पक्ष को छूकर रह जाती है । कला का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है, यद्यपि इसकी हजारों परिभाषाएँ की गई हैं । भारतीय परंपरा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं जिनमें कौशल अपेक्षित हो । यूरोपिय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है । कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कला का महत्व

जीवन ऊर्जा का महासागर है। जब अंत:चेतना जागृत होती है तो ऊर्जा जीवन को कला के रूप में उभारती है। कला कला, जीवन को सत्यम, शिवम, सुन्दरम से समन्वित करती है। इसके द्वारा ही बुद्धि आत्मा का सत्य स्वरूप झलकता है। कला उस क्षितिज की भाँति है जिसका कोई छोर नहीं, इतनी विशाल, विस्तृत, अनेक विधाओं को अपने में समेटे। तभी तो कवि मन कह उठा —

साहित्य संगीत कला विहिन:।
साक्षात पशु: पुच्छ विषाणहीन ॥

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के मुख से :- "कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है।"

प्लेटो ने कहा :- "कला सत्य की अनुकृति के अनुकृति है।"

कला में ऐसी शक्ति होनी चाहिए कि वह लोगों को संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठाकर उसे ऐसे ऊँचे स्थान पर पहुँचा दे

Attested
Principal
Bharathi College of Education

कला के प्रकार

1. **संगीत कला :-** संगीत केवल मानवमात्र में ही नहीं अपितु पशु-पक्षियों व पेड़-पौधों में भी अमृत रस भर देता है। पशु-पक्षी भी संगीत से प्रभावित होकर झूम उठते हैं। यही नहीं मानव के अनेक रोगों का उपचार भी संगीत की तरंगों से संभव है। कहा भी गया है :-

संगीत है शक्ति ईश्वर की, हर सुर में बसे राम।
रागी तो गाये रागिनी, रोगी को मिले आराम॥

2. **नृत्यकला :-** चाहे भरतनाट्यम हो या कथक, मणिपुरी हो या कुचिपुड़ी, विभिन्न भाव-भंगिमाओं से युक्त हमारी संस्कृति व पौराणिक कथाओं को ये नृत्य जीवन प्रदान करती है। शास्त्रीय हो या लोक-नृत्य इनमें खोकर तन ही नहीं मन भी झूम उठता है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

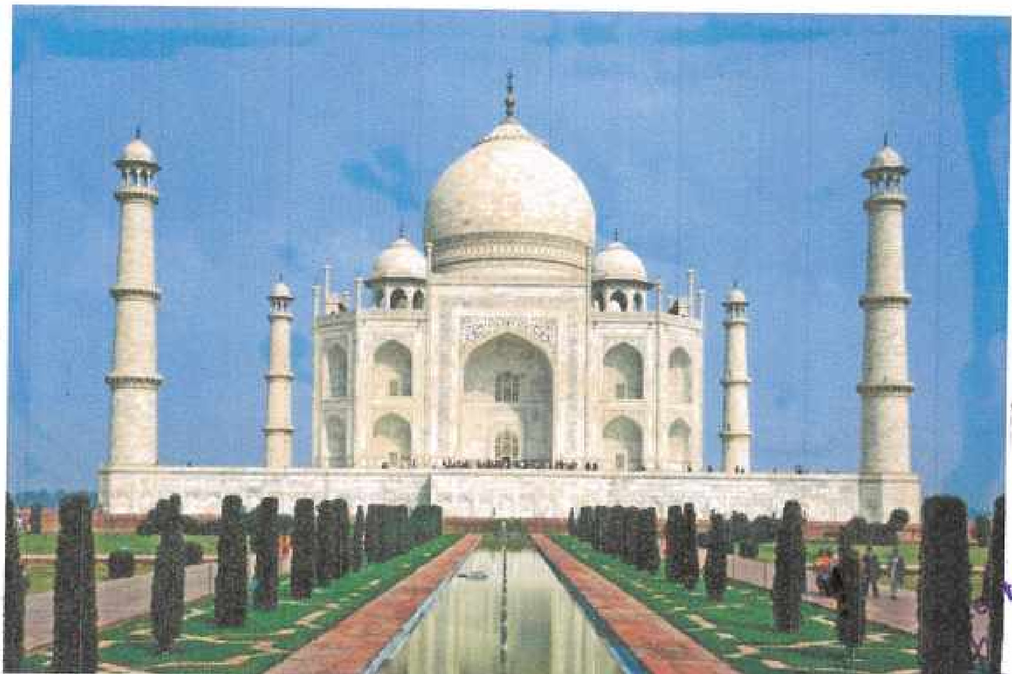

...ted
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

3. चित्रकला :- कलाओं में कला, चित्रकला है। मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरण की प्रवृति रखता है। जैसा देखता है उसी प्रकार अपने को ढालने का प्रयत्न करता है। अपनी रंगों से भरी तुलिका से चित्रकार जन-भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है तो दर्शक हतप्रभ रह जाता है। प्रागण युग से ही जो चित्र पारितोषक होते हैं वे मात्र एक विद्या नहीं अपितु मानवता के विकास का एक निश्चित सोपान प्रस्तुत करते हैं। चित्रों के माध्यम से आखेट करने वाले आदिमानव ने न केवल अपने संवेगों को बल्कि रहस्यमय प्रवृति और जंगल के खूंखार प्रवासियों के विरुद्ध अपने अस्तित्व के लिए किये गये संघर्ष को भी अभिव्यक्त किया है।

4. वास्तुकला :- आज भारत की वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण "ताजमहल" है जिसने विश्व की अपूर्व कलाकृतियों के सात आश्चर्य में शीर्षस्थ स्थान पाया है। लालकिला अक्षरधाम मंदिर, कुतुबमीनार, जामा-मस्जिद भी भारतीय वास्तुकला का अनुपम उदाहरण रही है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

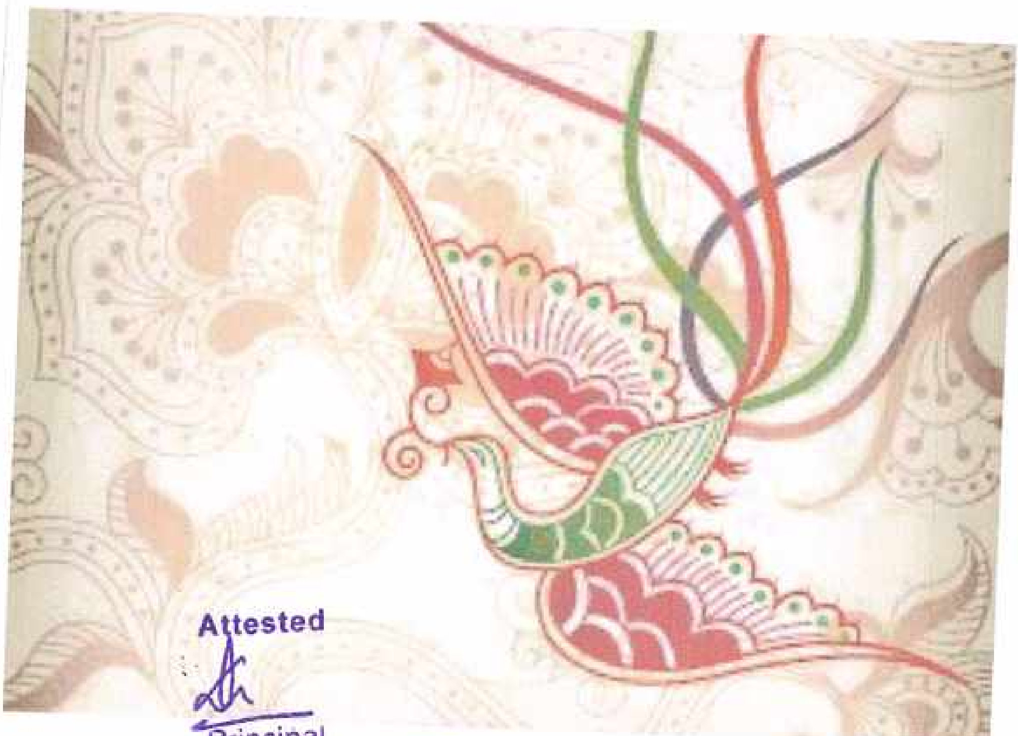

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

5. लोककला :- भारतीय संस्कृति में लोक कलाओं की खुशबू की महक आज भी अपनी प्राचीन परम्परा से समृद्ध है। जिस प्रकार आदिकाल से अबतक मानव जीवन का इतिहास क्रमबद्ध नहीं मिलता। इसी प्रकार कला का इतिहास क्रमबद्ध नहीं है, परन्तु यह निश्चित है कि सहचरी के रूप में कला सदा से ही साथ रही है। विवाह और शुभ अवसरों में लोककला का विशिष्ट स्थान है। आज के आधुनिक युग में भी इसे आदर-भाव, श्रद्धा और उपासना की दृष्टि से देखा जाता है।

6. मधुबनी शैली :- मधुबनी शैली, पहाड़ी शैली, तंजौर शैली, मुगल शैली, बंगाल शैली, अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण आज जनमानस के मन चिन्हित है। यदि भारतीय संस्कृति की मूर्तिकला व शिल्पकला के दर्शन करने हों तो दक्षिण के मंदिर अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। यहाँ मिनाक्षी मंदिर, वृहदीश्वर मंदिर, कोणार्क मंदिर अपनी पहचान के लिए प्रसिद्ध है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mander, Ranchi

विश्व विरासत सूची यूनेस्को में शामिल भारतीय धरोहर

क्रम संख्या	धरोहर	घोषणावर्ष
1	दिल्ली का लाल किला	1983
2.	अजन्ता की गुफाएँ	1983
3.	एलोरा गुफाएँ	1983
4.	ताजमहल	1983
5.	महाबलीपुरम के स्मारक	1984
6.	कोणार्क का सूर्य मंदिर	1984
7.	काजीरंगा नेशनल पार्क	1985
8.	केवलादेव नेशनल पार्क	1985
9.	मानस सेंक्चुरी	1985
10.	गोवा का चर्च	1986
11.	फतेहपुर सीकरी	1986
12.	हम्पी अवशेष	1986
13.	खजुराहो का मंदिर	1986
14.	एलिफेंटा की गुफाएँ	1987
15.	चोल मंदिर	1987 - 2004
16.	पहाड़कल का स्मारक	1987
17.	सुंदरवन नेशनल पार्क	1987
18.	नंदा देवी और फूलों की घाटी	1988 - 2005
19.	सांची का स्तूप	1989
20.	हुमायूं का मकबरा	1993
21.	कुतुबमीनार	1993
22.	माउन्टेन रेलवे	1999 - 2005
23.	बोधगया का महाबोधी मंदिर	2002
24.	भीमबेटका की गुफाएँ	2003
25.	चांपानेर - पावगढ़ पार्क	2004
26.	छत्रपति शिवाजी टर्मिनल	2004
27.	लाल किला दिल्ली	2007
28.	लद्दाख की पाण्डुलिपियाँ	2007

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष

हमारी संस्कृति के इन तत्वों को प्राचीन काल से लेकर आज तक की कलाओं में देखा जा सकता है। इन्हीं ललित कलाओं ने हमारी संस्कृति को सत्यम-शिवम्- सौन्दर्यम जैसे अनेक साकारात्मक पक्षों को चित्रित किया है। इन कलाओं के माध्यम से ही हमारा लोकजीवन लोकमानस तथा जीवन का आंतरिक और आध्यात्मिक पक्ष अभिव्यक्त होता रहा है। हमें इस अपनी परंपरा से कटना नहीं है अपितु अपनी परम्परा से ही रस लेकर आधुनिकता को चित्रित करना है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रश्नावली

1. कला क्या है?

2. कला के विभिन्न नामों को बताइए।

3. वास्तुकला क्या है?

4. शिक्षा में कौन-कौन सी कला आते हैं?

5. किन्हीं पाँच भारतीय धरोहरों के नाम बताइए।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

BHARTHI COLLEGE OF EDUCATION

An Abode of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed

SESSION: 2018-2020

EPC-2

PROJECT-2

TOPIC- "भारतीय परम्परागत शिल्पकला"

EXTERNAL

Guided by: -

ASST. PROF
RAKESH KUMAR RAI

Submitted By:-

NAME: - NISHANT ASHISH TIRKEY
ROLL NO: - 12
SESSION: - 2018-2020

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

2. भारतीय परम्परागत शिल्पकला क्या है? तथा इसकी शिक्षा में क्या योगदान है?

परिचय :- शिल्पकला ऐसे कलात्मक कार्य को कहते हैं जो उपयोगी के साथ-साथ सजाने के काम आता है, जिसे मुख्यत: हाथ से या सरल औजारों की सहायता से बनाया जाता है। ऐसी कलाओं का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व होता है। भारतीय हस्तशिल्प को शिल्पकला का सर्वोच्चकृष्ट माना जाता है। यहाँ दैनिक जीवन की सामान्य वस्तुएँ भी कोमल कलात्मक रूप में गढ़ी जाती हैं। भारत का प्रत्येक क्षेत्र अपने विशिष्ट शिल्पकला पर गर्व करता है।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हस्तकौशल / शिल्पकला की प्रकृति एवं स्वरूप

1. कार्यारम्भ :- किसी हस्तकार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व शिल्पी को यह पता होना चाहिए कि उसे अपने कर्म से क्या निर्मित करना है? उदाहरणार्थ यदि किसी शिल्पी को 'लक्ष्मी' की मूर्ति बनाना है तो लक्ष्मी की मूर्ति का आकार, स्वरूप उसके हृदय में पूर्वाभास और पूर्वानुभव के कारण अंकित रहता है। उसे उस मूर्ति के परिप्रेक्ष्य के विभिन्न अंगों के अनुपात का ज्ञान होता है। मूर्ति के साँचे का परिमाण का ज्ञान रहता है तब वह अपना कार्य प्रारम्भ करता है।

2. लक्ष्य का ध्यान :- हस्तशिल्पी को कार्य करते हुए लक्ष्य तक पहुँचने के लिए विचार - मंथन करना रहता है, अर्थात उसे तय करना रहता है कि वह मिट्टी की मूर्ति बनाएगा या पलस्तर की। शिल्पी को ज्ञात रहता है कि उसके सामने मिट्टी मौन है, वह साँचे और उंगलियों के स्पर्श से आकार देकर अपने लक्ष्य को कैसे साकार करेगा। उसे इस बात का भी आभास रहता है कि साँचे को कितने दबाव से दबाना है ताकि मूर्ति का सही आकार प्रस्तुत हो सके।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

इसके अलावा एक शिल्पी को प्रस्तुत वस्तु बनाने से पूर्व अनगढ़ कच्चे माल के संरक्षण की आवश्यकता होती है।

3. रूप और वस्तु का वैषम्य :-

हस्तकौशल के लिए प्रयुक्त सामग्रियों का रूप और आकार अनिश्चित होता है जिसे शिल्पी अपने कौशल द्वारा संवार कर एक निश्चित दर्शनीय रूप देता है। जैसे- मिट्टी से मूर्ति या बर्तन, लकड़ी से कुर्सी या अनेक प्रकार के सामान इत्यादि।

4. अन्योन्याश्रित :-

हस्तकौशल की एक विशेषता यह भी होती है कि वे सभी अन्योन्याश्रित होते हैं। अर्थात् एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। उदाहरणार्थ: सूत कातना, कपड़ा बुनना, कपड़ा सिलना ये सभी हस्त कौशल एक दूसरे से संबंधित हैं।

प्रकार :-

हस्तकौशल के कई प्रकार हो सकते हैं, परन्तु सबका लक्ष्य समाजोपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना होता है।

Attested
Principal
Bharati College of Education
Kandri Mandar, Ranchi

कौशल का उदाहरण	कौशल का लक्ष्य
1. बढ़ई का काम, मोची का काम, दर्जी का काम आदि।	काम में आनेवाले विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण।
2. कृषि, बागवानी आदि।	उत्पादन करना (जीवन-यापन हेतु)।
3. वैद्यक शिक्षण आदि।	शारीरिक और बौद्धिक विकास तथा ज्ञान का हस्तान्तरण।

विभिन्न प्रकार की शिल्पों का उद्देश्य अवश्य अलग अलग होता है, परन्तु सभी मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। मनुष्य की आवश्यकता शिल्पी को रचना या निर्माण के लिए प्रेरित करती है। जैसे- दिवाली के पर्व पर मिट्टी की मूर्तियाँ एवं खिलौने, विशिष्ट अवसर पर कविता या संगीत होता है। यदि सभी चित्रकार, मूर्तिकार, नृत्यकार तथा संगीतज्ञ मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रचना करते हैं तो सब शिल्पी हैं।

6 कार्यप्रणाली :-

कौशल या शिल्पी की एक निर्धारित कार्यप्रणाली होती है। इस कार्यप्रणाली को

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Mandar, Ranchi

शिक्षा और अभ्यास से सीखा जाता है। कोई भी व्यक्ति तब तक शिल्पकार्य नहीं कर सकता जबतक उसे इस शिल्प के औजारों या उपकरणों के प्रयोग की विधियों का अभ्यास न हो। जैसे- ब्लूपॉटरी बनाने वाले शिल्पी को स्फटिक चूर्ण, काँच, गोंद, कोबाल्ट-आक्साइड मिले रंग, भट्ठी, हस्तचालित पिसाई के चक्की, कुम्भ चक्र, साँचे, ब्रश, लकड़ी के हथौड़े आदि के प्रयोग का ज्ञान और अभ्यास होना चाहिए। बढ़ई के काम करने वालों को रन्दा, आरी, बसुला आदि चलाने का अभ्यास होना चाहिए।

इस प्रकार कई हस्तशिल्प में एक प्रकार का ही सामान या औजार का प्रयोग होता है। जैसे- काष्ठ शिल्प और सोने-चाँदी के वक्र के काम दोनों में हथौड़ी का प्रयोग होता है परन्तु हथौड़ी चलाने का तरीका अलग अलग होता है। इस प्रकार प्रत्येक हस्त-कौशल और कलाओं में उसके उपकरणों का प्रयोग का ढंग निश्चित होता है, यही प्राथमिक कार्य-प्रणाली कहलाती है।

7. कार्यकुशलता :-

कार्यप्रणाली का ज्ञान हो जाने का मतलब है कि व्यक्ति कार्य को आरम्भ करने के योग्य हो गया है। कार्य में कुशल होने का अर्थ है कि शिल्पी अपने कार्य में मौलिकता और सृजनात्मकता का समावेश करें। जैसे राजस्थान की जूतियाँ।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

[illegible] मैं [illegible] और लिखी
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] वातावरण [illegible] ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है ।

[illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भारत में विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प

1 बाँस हस्त शिल्प :-

बाँस का निर्माता होने के कारण भारत में बाँस से बने हस्तशिल्प सबसे इको-फ्रेन्डली शिल्प होते हैं। बाँस से कई-कई प्रकार के सामान बनते हैं। जैसे - टोकरी, गुड़िया, खिलौने, कॉसबो, खोराही, कुला, डुकुला, काठी, गहने के बक्से इत्यादि। बाँस का ज्यादातर हस्तशिल्प प०बंगाल असम और त्रिपुरा में बनता है।

2. बैल मेटल हस्तशिल्प :-

पीतल के कड़े के रूप जिसका उपयोग घंटी बनाने में किया जाता है इसे बैल मेटल कहते हैं। इस कड़ी मिश्रधातु का उपयोग सिंदुर के बक्से, कटोरे, मोमबत्ती स्टेंड, पेंडेंट और अन्य कई शिल्प बनाने में किया जाता है। यह हस्तशिल्प मध्यप्रदेश, बिहार असम और मणिपुर में प्रचलित है। मध्यप्रदेश में इस हस्तशिल्प को आदिवासी शिल्प के रूप में जाना जाता है।

3. पीतल हस्तशिल्प :-

पीतल के समानों की ड्युरेबिलिटी के कारण पीतल के बर्तन मशहूर हैं।

Attested
Principal
College of Education
...dar, Ranchi

Attested

Principal

Bharathi College of

Kandri, Mandar,

पीतल से बने सामान जैसे - रेंगते कृष्ण या गणेश की विभिन्न मुद्राओं की मूर्तियाँ, फूलदान, टेबल टॉप छेदवाले लैम्प, गहने के बक्से, हुक्का, खिलौने, वाइन ग्लास, प्लेट्स आदि। पीतल के बर्तन ज्यादातर राजस्थान में बनाए जाते हैं।

हड्डी और सींग हस्तशिल्प :-

ओडिसा के राज्य में उनमें हड्डी और सींग के हस्तशिल्प पक्षी और जानवरों के रूप बनाने के लिए प्रसिद्ध है जो असली और बहुत जीवंत लगते हैं। इसके अलावा ईयर रिंग्स, गहने, सिगरेट के डिब्बे, टेबल लैम्प, शतरंज सेट, मिर्च और नमक सेट आदि। ये मुख्यतः ओडिसा, कर्नाटक, केरल और उत्तर प्रदेश में बनाये जाते हैं।

5. जूट हस्तशिल्प :

पूरी दुनिया में जूट हस्तशिल्प में जूट कारीगरों ने अपनी खास जगह बनाई है। जूट शिल्प की विस्तृत रेंज में बैग, ऑफिस स्टेशनरी, चूड़ियाँ, गहने, फुटवेयर, वॉल हैंगिंग और कई सामान शामिल हैं। प० बंगाल, असम और बिहार सबसे बड़े जूट उत्पादक हैं और भारत में जूट हस्तशिल्प बाजार के अगुवा भी हैं।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कागज हस्तशिल्प :-

चटकदार रंगों वाले कागज को मिलाकर कई शिल्प जैसे- पतंग, मास्क, लैंप शेड, सजावटी फूल, कठपुतली हाथ के पंखे आदि बनाये जाते हैं। मुगलकाल में विकसित हुआ कुट्टी भारत में कागज हस्तशिल्प का प्रसिद्ध रूप है। यह शिल्प उद्योग मुख्य रूप से दिल्ली, राजगीर, पटना, गया, अहमदाबाद और इलाहाबाद में स्थित है।

मिट्टी के हस्तशिल्प :-

सिंधु घाटी सभ्यता में उत्पत्ति होने के बाद से मिट्टी के बर्तन भारत में हस्तशिल्प का सबसे प्राचीन रूप है। इस काम में संलग्न लोगों को कुम्हार कहा जाता है। विश्व प्रसिद्ध टेराकोटा रूप के अलावा मिट्टी के हस्त-शिल्प में लाल बर्तन, ग्रे बर्तन और काले बर्तन के रूप हैं। उत्तर प्रदेश काले पॉट के बर्तनों के लिए जाना जाता है। पश्चिम बंगाल के कृष्णानगर के अलावा बीकानेर, लखनऊ, पुणे और हिमाचल प्रदेश में मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शिल्पकला का शिक्षा में योगदान

हस्तकला सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के उत्कर्ष की महत्वपूर्ण विद्या है। हस्तकला मानव जीवन के उद्गम और विकास की अखिल कहानी का अभिव्यक्तिकरण है। सम्पूर्ण भारत या विश्व में भूतकाल का अध्ययन और प्रतिवेदन है।

पाठ्यपुस्तकों में मात्र तथ्यों और सूचनाओं का ही संग्रह हो तो विषयवस्तु नीरस और उबाऊ लगने लगेगी। हस्तशिल्प के माध्यम से सृजनात्मक समझ का विकास किया जा सकता है। चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत विषयवस्तु एक ओर तो विद्यार्थियों को आकर्षित करती है तो दूसरी ओर इनमें जिज्ञासा जगाती है।

बालक, शैशवावस्था से ही चित्रों को देखकर वस्तुओं को पहचानना सीखता है। चित्रों के द्वारा अध्ययन कर विद्यार्थी विषयवस्तु को सरलता तथा स्पष्टता से सीखने में सक्षम होते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ऐसे पाठों की वकालत करती है जिनमें गतिविधियाँ चित्र, तस्वीरों, मानचित्रों, कार्टूनों का समावेश है। ये सब चीजें विषयवस्तु को रोचक तथा आनंददायक बना देती हैं।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हस्तकला में शिक्षा

यूरोप में 18वीं शताब्दी में सौन्दर्य शास्त्रियों ने कलात्मक कार्यों को तीन वर्गों में विभाजित किया :-

I सौन्दर्यात्मक लक्ष्य से संबंधित कार्य - ललित कला
II नैतिक कार्य - आचरण कला
III उपयोगी कार्य - उदार कला

उपर्युक्त वर्गीकरण से स्पष्ट होता है कि कलाओं से मानव कल्याणकारी शिक्षा की प्राप्ति होती है। कला सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की व्यवहारिक रूप प्रस्तुत कर व्यक्ति को कर्तव्य पथ पर अग्रसर करती है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार :-

"हृदय की मुक्तावस्था रस-दशा कहलाती है। इस रस-दशा में आने के पश्चात ही मनुष्य अपनी पृथक सत्ता को भूलकर अपने हृदय को स्वार्थ संबंधों के संकुचित मण्डल के ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भावभूमि पर ले जाता है। इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल तक अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन कर देना होता है।"

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हस्तकला के अन्दर शिक्षा के निम्न प्रयोजन सौन्निहित हैं :-

(क) कला शिक्षा
(ख) जीवन की शिक्षा
(ग) सेवा शिक्षा
(घ) अनुभूतियों की शिक्षा
(ङ) आनंद की शिक्षा
(च) मनोरंजन की शिक्षा
(छ) सृजनात्मक की शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1998) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार :-

"हस्तकला शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए इसे सभी विषयों के साथ जोड़ना चाहिए। हस्तकला शिक्षा भी माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर तक एक विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए।" कला में शिक्षा के तत्वों की सम्पृक्तता के कारण ही विद्यालयी स्तर की शिक्षा में विविध स्तरों एवं अवसरों पर विविध प्रकार के कलात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जाता रहता है। जैसे - मिट्टी के हस्तशिल्प, कागज के हस्तशिल्प, जूट के हस्तशिल्प, बाँस के हस्तशिल्प आदि का आयोजन कर विद्यालय शिक्षा के अभीष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रश्नावली

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हस्तकला क्या है ?
2. हस्तकला के किन्हीं पाँच कलाओं के नाम बताएँ ।
3. कागज हस्तकला के बारे में बताइए ।
4. जूट हस्तकला से क्या क्या चीजें बनाई जाती हैं ?
5. शिल्प और कला में दो अंतर बताइए ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi